ISSN 2348-7828

# शिक्षा की बढ़ोतरी में दूरस्थ शिक्षा व पुस्तकालय की अहम् भूमिका

सालिक राम , डॉ. सरिता मिश्रा

**सार**

आज शिक्षा हर किसी की मांग है, जिसे पूरा कर पाना असंभव जैसा प्रतीत होता है, पर यह सम्भव बन गया है, जिसका प्रमुख कारण दूरस्थ शिक्षा है, जिसके माध्यम से आज हर कोई शिक्षा के मुख्य धारा से जुड़ा हुआ है। परांपरिक शिक्षा में एक ओर हमें नियमित समय और निश्चित मूल्य दूना होता है और प्रवेश के लिए निश्चित संख्या होती है, जिसके कारण कई लोग अपनी उच्च शिक्षा के सपनो को पूरा कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं, वहीं दूरस्थ शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम बन गया है, जिसके कारण एक बड़ी जनसंख्या को शिक्षा का अधिकार मिल गया है, और अपनी शिक्षा बिना किसी आर्थिक तंगी के पूर्ण कर पा रहा है, क्योंकि दूरस्थ शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है शिक्षा का, कि व्यक्ति काम भी कर सकता है जिससे उसकी अर्थिक स्थिति भी अच्छी रहे और पढ़ाई भी साथ ही साथ कर सके, जिससे उसकी अध्ययन कि जिज्ञासा भी पूरी हो सके और समाज में अपने मूल्य और दायित्वों का निर्वाहन भी अच्छे से कर सके।

इस पत्र के माध्यम से हम दूरस्थ शिक्षा और पुस्तकालय सेवाओं के माध्यम से समाज में हो रहे परिर्वतन का अध्ययन करेंगें जिससे समान्य जन को दूरस्थ शिक्षा पुस्तकालय और उनके सेवाओं के प्रति जागरुक कर सकें।

**मूख्य शब्द**

दूरस्थ शिक्षा, दूरस्थ पुस्तकालय, पुस्तकालय सेवा, पुस्तकालय सेवा के प्रकार, दूरस्थ शिक्षा पुस्तकालय, दूरस्थ शिक्षा पद्धति, दूरस्थ शिक्षा से लाभ, दूरस्थ शिक्षा के प्रकार, दूरस्थ पुस्तकालय के संसाधन, दूरस्थ शिक्षा से संबंधित तथ्य, दूरस्थ शिक्षा व समाज, दूरस्थ शिक्षा व पुस्तकालय, दूरस्थ शिक्षा का विस्तार।

दूरस्थ शिक्षा पुस्तकालय के लिए चुनौतियों का माहौल प्रदान करता है, जिसमें ग्रंथपाल को उसके दायित्वों को पूर्ण करने के लिए सजग होता है, वह कैसे पूस्तकालय सेवाओं को विद्यार्थी और शिक्षक के पास पहुचा सके, यह दायित्व एक ग्रंथपाल का होता है। आज दूरस्थ शिक्षा से संबंधित बहुत सारे शोध चल रहें हैं, जिनमें पुस्तकालयों के ई संसाधन और ई सूचना स्त्रोतों की बातें करते हैं क्योंकि यह मानव समाज जो शिक्षित है उनके लिए यह आवश्यक वस्तु बन गई है।

## दूरस्थ शिक्षा और भारतीय छात्र

अनादि काल से भौतिक शिक्षा जैसे गुरुकुल, गुरु शिष्य शिक्षा प्रक्रिया में शिष्य गुरु के पास रह कर शिक्षा ग्रहण करता था और अपनी शिक्षा पूर्ण होने के बाद ही घर आता था, इसी तरह भौतिक रूप से व्यवस्थित कक्षा और व्याख्यान से अध्ययन करने वाले विभिन्न विषयों के विद्यार्थीयों द्वारा आपने जिज्ञासु प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने वाले विद्यार्थीयों के लिए पारंपरिक शैक्षणिक शिक्षा की रीढ़ रही है। आज के प्रगतिशील समाज और अधुनिकता प्रौद्योगिकी जैसे टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन और हाल ही में इंटरनेट, के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा जैसे शिक्षा का विकास हुआ है। भारत में राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालयो कि स्थापना हुई, जिनमें से हम इग्नु अंतराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जो कि एक शासकीय केन्द्रीय दूरस्थ विश्वविद्यालय है, के बारे मे हर कोई जानता है।

इंटरनेट के विकास और बढ़ते उपयोग के माध्यम से विद्यार्थी केवल निर्देश प्राप्त कर किसी भी शिक्षक से लाईव जुड़ कर अध्ययन कर सकते हैं, उनसे लाईव अपनी समस्याओ का समाधान पा सकते हैं, व केवल कुछ ही क्षण में बटन दबाते ही घर पर आसानी से सीख सकते हैं, हजारों मील दूर शिक्षक के साथ बातचीत कर सकते हैं और शरीरिक रूप से कक्षा में आए बिना समस्याओं का समाधान पा सकते हैं, जबकि पारंपरिक शिक्षा की हम बात करें तो अधिक महंगा विकल्प हो सकता है इसका सही विकल्प दूरस्थ शिक्षा सबसे सर्व श्रेष्ठ माना गया है।

सीखने के लिए दिये गए निर्देशात्मक अभ्यास भी है, जो प्रभावी ढंग से उपकरणों और प्रद्योगिकी की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग करना पड़ता है। विद्यार्थी व शिक्षक संकाय के अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार के ऐप्स, सॉफटवेयर का उपयोग कर सकते हैं जैसे-वेबेक्स, जूम, माईक्रोसाफट वींडो या ऐप्पल।

भारत में दूरस्थ शिक्षा दूरस्थ शिक्षा परिषद (डी.ई.सी.) से मान्यता है, जो केन्द्रीय स्तर पर मूल्यांकन कर मान्यता प्रदान करते हैं।

## दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में पुस्तकालय सेवाएं

दूरस्थ शिक्षा में सूचना का संग्रहण और उनका विद्यार्थी में विस्तार करना एक महत्वपूर्ण कार्य है, जो पुस्तकालय सूचना और अध्ययन सामग्री का विद्यार्थीयों तक पहुंच सरल व सुविधा जनक बनाता है, व दूरस्थ शिक्षा पुस्तकालय में निम्नांकित सेवाएं प्रदान की जाती है।

* दूरस्थ शिक्षा गाईड सेवाएँ
* अंतरपुस्तकालयी ऋण
* आस्क-ए-लाईब्रेरियन
* विषय विषेषज्ञ
* पाठ्यक्रम आरक्षित उपकरण
* लिब गाइड्स सब्जेक्ट गाईड्य
* पुस्तकालयों की सूची
* डेटाबेस
* ई-जर्नल खोज
* ई- पुस्तक संग्रह
* संदर्भ कार्य तकनीकी सहायता
* लॉगिन समस्या रिपोर्ट



Scanned with CamScanner

* ऑनलाइन पाठयक्रम सहायता
* सहायता केंद्र
* नेटवर्किंग
* नेटवर्किंग और कम्प्यूटर समर्थन
* ई- लर्निंग छात्र ट्यूटोरियल

छात्र ऑनलाइन शिक्षण शैली को पसंद करने का मुख्य कारण इस तरह हैं छात्रों को शैक्षणिक कार्यक्रम का दायित्व का निर्वाह करने में सक्षम होते हैं। संकाय गतिविधियों में समय दे पाना यह प्रमुख कारण है। सीखन के लिए छात्रों को प्रेरित करना और विभिन्न प्रकार के क्रिया कलापों को कर पाने में सक्षम बनाना। छात्रों का व्यवहार और अर्थिक प्रभाव से छूटकारा मिल जाना।

दूरस्थ शिक्षा से संबंधित छत्तीसगढ़ के क्षेत्र विशेष में सर्वे किया गया था, जिसमें विद्यार्थीयो के द्वारा निम्नांकित उत्तर दिये गये-मुझे परिसर में आने की जरूरत नहीं है, इसलिए यह अध्ययन के लिए बहुत अच्छा है। यह काम के दौरान पढने की आजादी प्रदान करता है इस लिए मैं दूरस्थ शिक्षा को अच्छा मानती हूं।

यह अत्यधिक खर्चीली नही है, और स्कॉलरशिप भी मिलती है इसलिए यह अच्छा है। दूरस्थ शिक्षा में अगर ऑनलाईन कक्षाएँ होगी तो मैं कक्षा मे निरंतर रह पाऊँगी। दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थीयों के लिए बहुत ही लचीला है।

इस अध्ययन में विद्यार्थीयों द्वारा दूरस्थ पुस्तकालय के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिला जो, शिक्षा के प्रति उनकी जागरूकता को प्रदर्षित करता है।

### दूरस्थ शिक्षा के परिणाम

वर्तमान समय में हमने देखा है कि किस तरह से कोविड-19 का दौर हमारे समय देखने को मिला। यह 11 मार्च, 2020 को विश्व स्वस्थ संगठन ने कोविड-19 को वैश्विक महामारी घोषित किया। जिस गति के साथ कोविड दुनिया के सभी हिस्सों में फैल गया, और बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए, अमेरिक सहित दूनिया भर की अधिकांश सरकारों ने इस बीमारी के चैन को तोड़ने के लिए अभूतपूर्व सामाजिक राकथाम के उपायों को अपनयी गई, दूनिया भर के शैक्षणिक संस्थानों को बंद करना पड़ा। इस दौरान इग्नु जिसे हम पीपुल्स युनिवर्सिटी के नाम से जानते हैं, उसमें लोगों ने अधिक मात्र में नामांकन करा कर यह साबित कर दिया कि शिक्षा कभी खत्म होने वाली नही हैं और दूरस्थ शिक्षा के महत्व को लोगों माना और स्वीकार भी किया।

### निष्कर्ष और सुझाव

भारत जैसे महान् देश जहां शिक्षा के प्रति जिज्ञासा रखने वाले लोग रहते हैं जो निरंतर सिखने पर यकीन रखते हैं और एक ओर भारत की जनसंख्या जो पूरे विश्व में दूसरा स्थान रखती है। जिसका केवल एक ही नारा है-'सबका साथ सबका विकास', जिसे पूर्ण करने के लिए भारत का हर एक व्यक्ति वचनबद्ध है। जिसमे शिक्षा का एक अलग रोल है इसे पूरा करने मे दूरस्थ शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

दूरस्थ शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसे हम जीवन्त शिक्षा कह सकते हैं और यह सभी वर्ग के लिए लाभकारी है। और यह शिक्षा सभी के विकास के साथ-साथ प्रोफेशनल विकास जैसे कार्यों मे भी बहुत सहायक माना गया है। इस पत्र के माध्यम से हमने दूरस्थ शिक्षा के लाभ और दूरस्थ शिक्षा के अध्ययन के तरीकों का अवलोकन किया जिसमें हमने पाया है कि दूरस्थ शिक्षा, न केवल अध्ययन के अवसर ही प्रदान नही करता, अपितु यह संख्यात्मक रूप से भी उच्च शिक्षा को सभी के लिए लाभकारी बनाता है।

सुझाव के रूप में केवल यह बातें सामने आती हैं कि इसलिए शिक्षा का स्वरूप कोई भी हो जीवन मे काम जरूर आता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. Akparobore, O.D. (2011), "The role of public libraries in promoting adult education in Nigeria", Library Philosophy and Practice (e-Journal), Vol. 453. available at: https://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/453
2. Barnhart, F.D. and Pierce, J.E. (2011), "Becoming mobile: reference in the ubiquitous library", Journal of Library Administration, Vol. 51 No. 3, pp. 279-290.Bello,
3. S.A. and Aghadiuno, P.C. (2019),"Information needs, repackaging and dissemination: sustainable library services for national development", International Journal of Arts, Languages and Business Studies (IJALBS), Vol. 2 No. 1, pp. 176-186. available at: www.ijalbs.com/index.php/ijalbs/article/view/56/55
4. Dhawan, S.M. (2018), "Basics of information dissemination", available at: https://aladin.uil.unesco.org/paldin/pdf/course02/unit_05.pdf
5. Echezona, R.I. (2007), "The role of libraries in information dissemination for conflict resolution, peace promotion and reconciliation", African Journal of Library, Archives & Information Science, Vol. 17 No. 2, pp. 153-162.
6. Litzenberger, A. (2016), "Characteristics of the 21st-century library", available at: www.eab.com/research-and-insights/facilities-forum/expertinsights/2016/characteristics-21st-century-library


*शोध छात्र*
*पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग*
*डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय बिलासपुर छ.ग.*



Scanned with CamScanner